मॉड्यूल - 4

भारत में आदिवासी और लोक कला

15. लोक एवं आदिवासी कला

15

लोक एवं आदिवासी कला

प्रिय शिक्षार्थी! आप चित्रकला के लगभग सभी रूपों के विषय में जान चुके हैं। इस पाठ में हम लोककला एवं आदिवासी कला के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे। लोककला मूलत: जनसामान्य की कला है, अत: उसका इतिहास भी उतना ही पुराना है जितना भारतीय ग्रामीण सभ्यता का इतिहास है। सिंधु घाटी की सभ्यता से मिले कला-अवशेष भारतीय आदिवासी लोककलाओं के प्राचीनतम नमूने हैं।

भारत अपनी सांस्कृतिक विविधता के लिए विश्वविख्यात है। यहाँ के प्रत्येक सांस्कृतिक अंचल की अपनी विशिष्ट आदिवासी लोक कलाएँ हैं। अपने परंपरागत स्वरूप में आदिवासी लोक-चित्रकला क्षेत्र-विशेष या समुदाय-विशेष के जनसामान्य द्वारा किया गया वह कलाकर्म है जो जनहित और व्यक्तिगत संतुष्टि के लिए हाता है। यह कलाकर्म अवसर-विशेष से जुड़े अनुष्ठान एवं आवश्यकताओं को संपन्न करने के लिए होता है।

चित्र अपने आस-पास सहज उपलब्ध प्राकृतिक रंगों से दीवार और भूमि, दोनों पर बनाए जाते हैं। चित्रांकन हेतु किसी वृक्ष की टहनी एवं कपड़े के टुकड़े का प्रयोग किया जाता है। पीली मिट्टी, गेरू, खड़िया, काजल, चावल का आटा, हल्दी, सिंदूर, महावर, नील, गोबर और वृक्षों के फूल-पत्तों से प्राप्त रंगों के प्रयोग से अंकित किए जाने वाले इन चित्रों को सामान्यत: स्त्रियाँ ही बनाती हैं। ये चित्र परंपरागत रूप से बदलते अवसरों के साथ लगभग वर्ष भर बनते-बिगड़ते रहते हैं। स्त्रियाँ बचपन से ही इन्हें आत्मसात करती चलती हैं और चित्रांकन की यह धारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को स्वत: ही हस्तांतरित होती चलती है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप :

- भारत की प्रमुख आदिवासी लोक-चित्रकला परंपराओं के बारे में वर्णन कर सकेंगे;
- महाराष्ट्र के वार्ली आदिवासियों द्वारा दीवार पर बनाए जाने वाले वार्ली चित्रों का वर्णन कर सकेंगे;

- मध्य प्रदेश के गौण्ड आदिवासियों द्वारा चित्रित किए जाने वाले गौण्ड चित्रों के बारे में वर्णन कर सकेंगे;
- गुजरात एवं मध्यप्रदेश के भील आदिवासियों द्वारा दीवारों पर अंकित किए जाने वाले 'पिथोरा चित्रकला' को प्रस्तुत कर सकेंगे;
- बिहार के मिथिला क्षेत्र में प्रचलित दीवार पर बनाए जाने वाले मधुबनी लोकचित्रों का वर्णन कर सकेंगे;
- पश्चिम बंगाल के कालीघाट पटचित्रों के बारे में उल्लेख कर सकेंगे;
- भारत के दक्षिणी भाग में प्रचलित कलमकारी के बारे में वर्णन कर सकेंगे।

15.1 वार्ली चित्र

प्रिय शिक्षार्थी! पहले हम भारत की वार्ली जनजातीय चित्रकला के बारे में जानेंगे।

बुनियादी सूचना

महाराष्ट्र के थाने जिले के डहाणू एवं जव्हार क्षेत्रों में बसने वाले वार्ली आदिवासियों द्वारा 'विवाह' एवं 'नई फसल की कटाई' के अवसर पर बनाए जाने वाले ये चित्र वस्तुतः उन्हें बनाने वाले वार्ली आदिवासियों के नाम से विख्यात हैं। परंपरागत वार्ली चित्रों की विशेषता उनके सरल, सहज

चित्र 15.1: पालघट देवी का चौक

एवं पुरातन स्वरूप में निहित है। वे प्राचीन गुफाचित्रों के समान सभी जगह पाए जाने वाले प्रागैतिहासिक गुफा चित्रों के समान हैं। इनमें मानव, पशु-पक्षी एवं अन्य आकृतियाँ, त्रिभुजों के विमुखी संयोजन से बनाई जाती हैं। ये अलंकृत अविस्तृत आकृतियाँ शानदार ढंग से गतिशील और सामंजस्यपूर्ण हैं। पेंटिंग आमतौर पर वार्ली के परिवेश और जीवन का प्रतिनिधित्व करती है। वार्ली पेंटिंग पारंपरिक रूप से दीवारों पर किया जाता है हालाँकि शहरी बाज़ारों के लिए बनाए जाने वाले वार्ली चित्र कपड़े या कागज पर बनाए जाते हैं।

शीर्षक : **पालघाट देवी का चौक**

माध्यम : जलरंग, खनिज रंग

समय : समकालीन

चित्रकार : जीव्य सोमा माशे

संग्रह : शिल्प संग्रहालय, नई दिल्ली

सामान्य विवरण

परंपरागत रूप से विवाह अनुष्ठान हेतु घर के अंदर मुख्य दीवार पर बनाया जाने वाला वार्ली चित्र पालघाट देवी का चौक कहलाता है। शीर्ष दो कोनों पर प्रतिनिधित्व करने वाले सूर्य और चंद्रमा की आकृतियाँ या बेसिंग पर दुल्हन और दूल्हे द्वारा पहना जाने वाले औपचारिक मुकुट को रंगा जाता है। देवी की आकृति के नीचे शुभ रंग अंकित किया जाता है। पुनः चौक शादी के दृश्यों और रोजमर्रा की गतिविधियों से घिरा हुआ होता है। इनमें घोड़ी पर सवार दूल्हा, नाचते हुए पुरुष और महिलाएँ, शिकार करना, खेती के दृश्य, ताड़ी, वनस्पतियाँ ओर जीवों का चित्रण आदि शामिल होते हैं। ये विवाहित महिलाओं द्वारा बनाए जाते हैं। उसके बाद उत्साही युवतियाँ बाकी दीवार का कार्य पूरा करती हैं और काल्पनिक दृश्यों का एक वास्तविक कोलाज बनाती हैं।

आमतौर पर वार्ली आदिवासी अपना घर बाँस से बने ढाँचे पर मिट्टी चढ़ाकर बनाते हैं। ये दीवारों पर लाल मिट्टी में गोबर मिलाकर लिपाई करते हैं। दीवारों पर चित्र बनाने के लिए चावल के आटे में पानी मिलाकर बनाया गया सफ़ेद पेस्ट काम में लाया जाता है। सलाती नामक घास की जड़ों या ताड़ वृक्ष की पत्तियों के मध्य भाग की लकड़ी के एक सिरे को कूची जैसा बनाकर उसे चित्र बनाने हेतु ब्रश की भाँति काम में लाया जाता है। गहरे भूरे रंग की पृष्ठभूमि पर सफेद रंग से बने चित्र बहुत ही सादगीपूर्ण परंतु जीवंत दिखते हैं।

वार्ली कृषक नई फसल से प्राप्त धान को आदिवासी देवता कणसारी ऐ को समर्पित करते हैं। उस समय वे खलिहान, घर की बाहरी दीवारों, धान रखने की कोठरियों आदि पर पश्ती चित्र बनाते हैं। इस अवसर के लिए पश्ती डिजाइन की गई आकृतियों को बाहरी दीवार और मिट्टी के भंडारण पर मुठ्ठी वाले हाथ की छापा को दोहराकर चित्रित किया जाता है।

पाठगत प्रश्न 15.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. वार्ली चित्र भारत के किस राज्य में बनाए जाते हैं -

   (i) महाराष्ट्र का थाने जिला (ii) मध्यप्रदेश का झबुआ जिला

   (iii) बिहार का मधुबनी जिला (iv) कोलकाता का कालीघाट

2. वार्ली चित्र शैली में बनाए जाने वाली 'पालघट देवी का चौक' के कलाकार का नाम है-

   (i) गंगा देवी (ii) रवींद्रनाथ टैगोर

   (iii) जीव्य सोमा माशे (iv) इनमें से कोई नहीं

15.2 पिथोरा चित्र

अब हम एक सुंदर लोककला, पिथोरा चित्रकला के बारे में जानेंगे।

बुनियादी सूचना

मध्यप्रदेश के झाबुआ ज़िले में बसने वाले भील एवं भिलाला आदिवासियों तथा गुजरात के वडोदरा जिले के राठवा आदिवासियों में पिथोरा चित्र बनाने की एक लंबी और समृद्ध परंपरा है। भील और राठवा आदिवासियों में इन चित्रों की चित्रण-शैली और योजना में काफी भिन्नता होती है, परन्तु उनका मूल कथानक एवं अनुष्ठान लगभग समान होता है। चूँकि ये चित्र पिथोरा देव को समर्पित होते हैं, इसलिए इन्हें पिथोरा चित्र कहा जाता है। रंग-योजना की दृष्टि से मध्यप्रदेश के भीलों द्वारा बनाए जाने वाले पिथोरा चित्र अधिक पुरातन, सादा एवं सीमित रंगों से बने होते हैं। जबकि गुजरात के राठवों द्वारा बनाए जाने वाले चित्र अधिक विवरणात्मक, आलंकारिक एवं चटख रंगों से बनाए जाते हैं।

जब कोई संतान-प्राप्ति या अच्छी फसल के लिए पिथोरा देव की मनौती मानता है तो उसके पूरा होने पर उसे पिथोरा चित्र बनवाकर अनुष्ठान संपन्न कराना होता है। चित्र घर के अंदर मुख्य दीवार पर बनवाया जाता है तथा चित्र बनाने वाले को लखिंद्रा कहा जाता है।

वर्तमान में अनेक भील, भिलाला एवं राठवा चित्रकार सजावटी और विचित्र पिथोरा चित्र बना रहे हैं और उन्हें शहरी कला बाज़ार में बेच कर अपनी जीविका चला रहे हैं। ये नये प्रकार के पिथोरा चित्र कागज या कपड़े पर बनाये जाते हैं और इन्हें बनाने हेतु पोस्टर एवं एक्रालिक रंगों का प्रयोग किया जाता है।

चित्र 15.2: पिथोरा चित्र

शीर्षक : **पिथोरा चित्र**

माध्यम : जलरंग, खनिज रंग

चित्रकार : अज्ञात

संग्रह : जनजातीय संग्रहालय, भोपाल, म. प्र.

सामान्य विवरण

जब कोई भील या राठवा संतान प्राप्ति या अच्छी फसल के लिए पिथोरा देव की मनौती मानता है तो उसके पूरा होने पर उसे लखींद्रा (पवित्र भित्ति चित्रों का पारंपरिक चित्रकार) द्वारा पिथोरा चित्र बनवाकर अनुष्ठान संपन्न करना होता है। चित्र घर के अंदर मुख्य दीवार पर बनवाया जाता है। सबसे पहले दीवार को गोबर-मिट्टी से लीपकर उसे चूने या सफ़ेद मिट्टी से पोता जाता है। दीवार पर एक आयताकार हाशिया तैयार किया जाता है, जिसे पिथोरा का घर कहते हैं। इसके बाद इसके ऊपरी मध्य भाग में दो घोड़े बनाए जाते हैं, जो पिथोरा देव का प्रतिनिधित्व करते हैं, तत्पश्चात अन्य महत्वपूर्ण देवी-देवताओं के घोड़े चित्रित किए जाते हैं। इसके बाद पिथोरा के घर (हाशिए) के बाहर एक काला घुड़सवार जिसे काठिया सवार भी कहते हैं, चित्रांकित किया जाता है। तदुपरांत हाशिए के अंदर शिकार का दृश्य, दो मुँह वाली घोड़ी, शेर, हाथी, ऊँट, गाय, खरगोश, मोर, बावड़ी, पनिहारी, भिश्ती, नाग, बिच्छू, दही बिलोती स्त्रियाँ, बिल्ली, हुक्का पीते एक टंग्या (एक पैर वाला आदमी), बारह मत्था दैत्य (बार सिंह वाला दैत्य), काँवड़ लिए आदमी,

फौज-पलटन, झाड़ पर खेलते बंदर, पिंजड़े में पोपट, मछली, बत्तख, मुर्गी, ताड़ी का झाड़, छीमल वृक्ष पर लगी मधुमक्खी का छत्ता, चाँद, सूरज, हल-बैल लिए किसान और अंत में छिलाना (मैथुनरत युगल) बनाया जाता है। ये सभी पिथोरा देव के साथी माने जाते हैं और इनमें से यदि एक भी चरित्र का चित्रण नहीं किया गया तो यह अनुष्ठानिक पिथोरा चित्र अधूरा माना जाता है। चित्र में पिथोरा देव के कथागीतों में वर्णित चरित्रों का चित्रण किया जाता है। इन चरित्रों की संख्या गाँव-गाँव में मान्यता और विश्वास के अनुसार बदलती रहती है परन्तु मुख्य चरित्र लगभग समान रहते हैं।

पाठगत प्रश्न 15.2

1. पिथोरा चित्र भारत के किस राज्य में और किन आदिवासियों द्वारा बनाए जाते हैं?
2. पिथोरा चित्र किस देवता को समर्पित होता है?
3. भील एवं राठवा आदिवासियों द्वारा बनाए जाने वाले पिथोरा चित्रों में क्या अंतर है?
4. पारंपरिक पिथोरा चित्र कौन बनाता है और इन्हें बनाने में कौन सी सामग्री प्रयोग की जाती है?

15.3 मिथिला अथवा मधुबनी चित्र

मधुबनी बिहार की प्रसिद्ध लोक चित्रकला है। शिक्षार्थियों, आइए इस लोक कला को जानें।

बुनियादी सूचना

मधुबनी चित्र मिथिला लोकचित्र नाम से विख्यात है। मधुबनी चित्रों का उद्‌गम मूलत: यहाँ प्रचलित कोहबर घर में बनाए जाने वाले भित्तिचित्रों से है। विवाह एवं सुखद-दाम्पत्य जीवन से संबद्ध, कोहबर चित्रों में उर्वरता एवं मंगल प्रतीकों तथा अभिप्रायों के साथ इष्ट देवी-देवताओं एवं स्थानीय विश्वासों एवं प्रथा के अनुरूप चरित्रों का भी निरूपण किया जाता है।

परंपरागत मिथिला चित्रों के विपरीत जीविकोपार्जन हेतु बनाए जाने वाले मधुबनी चित्र कागज के अतिरिक्त प्लायबोर्ड एवं कपड़े पर भी बनाए जा रहे हैं और नए-नए आधुनिक विषयों पर भी प्रयोग किया जा रहा है।

शीर्षक	:	**जलरंग**
माध्यम	:	कोहबर चित्र
समय	:	समकालीन
चित्रकार	:	पदमश्री गंगा देवी
संग्रह	:	शिल्प संग्रहालय, नई दिल्ली

चित्र 15.3: कोहबर चित्र

सामान्य विवरण

कोहबर घर वस्तुत: वह कमरा है जिसमें विवाह-संस्कार के बाद वर अपनी ससुराल में जब तक रुकता है, इस कमरे में रहता है। इसी में नव दम्पति, धार्मिक अनुष्ठान करते हैं। कोहबर घर कन्यापक्ष वाले अपने घर में बनाते हैं। सुहागन स्त्रियाँ अनुष्ठानिक विवाह गीत गाते हुए यह चित्रकारी करती हैं। चित्रण के लिए दीवार पर चावल के आटे को पानी में घोलकर तैयार किए गए सफेद रंग से पोता जाता है और इस पर मंगलचित्र बनाए जाते हैं। पहले बनाई जाने वाली आकृतियों का रेखांकन कोयला या बाँस की एक पतली पट्टी को दीपक के कालिख में भिगोकर किया जाता है। तदुपरांत चमकीले एवं चटख रंग भरे जाते हैं। रेखांकन बाँस की पतली तीली से किया जाता है और रंग भरने के लिए इस तीली के एक सिरे पर थोड़ी रूई लपेट ली जाती है। परंपरागत रूप से महिलाएँ स्वयं स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री जैसे दीपक की कालिख (काले), पीला रंग हल्दी या बरगद के पेड़ के रस के साथ नींबू, पलाश के फूल (केसर) को मिलाकर रंग बनाती है। हरा रंग (गोबर), पीपल की छाल (लाल रंग), स्याही या नील (नीला, महावर (गहरा गुलावी)।

विवाह एवं सुखद दाम्पत्य जीवन से संबद्ध कोहबर चित्रों में उर्वरता एवं मंगल-प्रतीकों तथा अभिप्रायों के साथ इष्ट देवी-देवताओं एवं नैना जोगिन जैसे स्थानीय पात्रों एवं प्रथा के अनुरूप चरित्रों का

भी निरूपण किया जाता है। मुख्यत: तोते, पालकी में जाते हुए वर-वधू, विवाह संस्कार के दृश्य, कलश, कमल के बील, बांस, पान की बेल, लौंग का वृक्ष, मछली, कछुआ, लटपटिया सुआ, नैना जोगन, राधा-कृष्ण, शिव-पार्वती, चन्द्र-सूर्य, सर्प, चिड़िया, मोर, दशावतार, ब्रह्मा, विष्णु, महेश एवं सुहाग-प्रतीक आदि बनाए जाते हैं॥ मधुबनी भित्तिचित्र में कोई खाली जगह नहीं है। अंतराल ज्यामितीय और पुष्प रूपांकनों, पशु और पक्षी की आकृतियों से ढके हुए हैं।

पाठगत प्रश्न 15.3

1. कोहबर क्या है? उसमें बनाए जाने वाले अभिप्राय एवं चरित्र कौन से हैं?
2. मधुबनी शैली के चित्रों की विशेषताएँ क्या हैं?
3. मधुबनी चित्रों के मुख्य विषय क्या हैं?

15.4 कालीघाट चित्रशैली

अब हम एक और लोककला को समझेंगे, वह कालीघाट चित्रकला है।

बुनियादी सूचना

कालीघाट चित्रशैली का नाम इसके उद्गम-स्थल कोलकाता के कालीघाट के नाम पर पड़ा जहाँ प्रसिद्ध काली मंदिर है, जिसके दर्शनार्थ हज़ारों तीर्थयात्री आते हैं। कालीघाट चित्र उन्नीसवीं सदी के औपनिवेशिक कोलकाता में हो रही सामाजिक एवं सांस्कृतिक उथल-पुथल का परिणाम थे।

उस समय अनेक पटुआ चित्रकार ग्रामीण क्षेत्रों से कोलकाता आ बसे थे जो मूलत: कथाचित्र एवं खिलौने रंगने का काम करते थे। उन्होंने काली मंदिर आने वाले तीर्थयात्रियों हेतु देवी-देवताओं के चित्र बनाना आरंभ किया। कालीघाट चित्र जलरंगों से कागज पर बनाए गए, जिनमें रंगों का बेधड़क प्रयोग एवं आकृतियों का सरलीकरण किया गया। बाद में इनमें दैनिक जीवन की छोटी-बड़ी घटनाओं, प्रचलित लोकोत्तियों एवं कानाफूसियों का भी चित्रण होने लगा जो तत्कालीन सामाजिक बुराइयों पर कटाक्ष था। इस प्रकार के चित्रों में नृत्यांगना, संगीतकार, बाल सँवारती स्त्री, लाल गुलाब हाथ में लिए हुए स्थूलकाय स्त्री, सर्प, बिल्ली, मछली, झींगा आदि के चित्र बनाए गए।

कालांतर में कालीघाट चित्र अच्छे हैम्प पेपर पर बनाए गए जिनमें चटख रंगों से बने देवी-देवताओं के चित्र प्रमुख हैं। यूरोप में कालीघाट चित्र इतने लोकप्रिय हो गए थे कि जर्मनी में इन्हें लिथोग्राफी द्वारा छापा जाने लगा था।

आज भी अनेक पटुआ चित्रकार इस शैली को जीवित बनाए हुए हैं एवं कालीघाट शैली के पुराने प्रसिद्ध चित्रों की नकल बनाकर जीविका कमा रहे हैं।

चित्र 15.4: सीता एवं लव-कुश

शीर्षक	:	**सीता एवं लव-कुश**
माध्यम	:	जलरंग
समय	:	समसामयिक
चित्रकार	:	अज्ञात
संग्रह	:	व्यक्तिगत

सामान्य विवरण

कालीघाट शैली में बनाए गए इस चित्र का चित्रण विश्वप्रसिद्ध भारतीय महाकाव्य 'रामायण' से लिया गया है। चित्र में माँ सीता और उनके लाड़ले दो पुत्र- लव एवं कुश को वाटिका में एक वृक्ष के नीचे अत्यंत आत्मीयता से बैठा दर्शाया गया है। माँ सीता अपने पुत्रों को कोई कथा सुना रही है। चित्र का संयोजन बहुत की सहज एवं सरल है, जिसमें तीनों एक चट्टान पर बैठे

हुए हैं। पृष्ठभूमि में एक बड़ा वृक्ष है। कालीघाट शैली के अनुरूप रेखांकन को प्रधानता दी गई है। मानव देह आकृतियों को सुस्पष्ट चित्रित किया गया है। शरीर की माँसलता एवं गोलाई दर्शाने हेतु बाह्य रेखाओं के पास हल्के नीले रंग से छाया-प्रकाश का प्रभाव दिया गया है तथा कपड़ों एवं शरीर पर यह प्रभाव देने हेतु लाल रंग का प्रयोग किया गया है। हल्की नारंगी रंग की पृष्ठभूमि में हरे रंग से बने वृक्ष के पत्ते उभर कर आ रहे हैं। सीता एवं लव-कुश के चेहरे मार्मिक एवं भावप्रवण हैं। उन्हें आभूषणों से सज्जित किया गया है। कालीघाट शैली में बने इस चित्र में स्निग्ध चेहरे पर लंबे-बड़े नेत्र इस शैली की विशेषता के परिचायक हैं।

पाठगत प्रश्न 15.4

1. कालीघाट चित्रों के पारंपरिक खरीदार कौन थे?
2. कालीघाट चित्र किस माध्यम और सामग्री से बनाए गए?
3. कालीघाट चित्रों के प्रमुख विषय क्या थे?

क्रियाकलाप

किसी लोककला संग्रहालय या स्टूडियों में जाएँ और कुछ लोक और जनजातीय कलाएँ एकत्रित कीजिए। इन कलाकृतियों का एक कोलाज बनाएँ। इन विभिन्न प्रकार की लोक और जनजातीय कलाओं पर कम-से-कम दो पंक्तियाँ लिखिए।

कोलाज	दो-दो पंक्तियाँ

15.5 कलमकारी

भारत के विभिन्न भागों में लोक कलाएँ पाई जाती हैं। आइए, अब हम कलमकारी लोक-शैली के बारे में जानें।

बुनियादी सूचना

कलमकारी वह शिल्प विधा है जिसके द्वारा कलम एवं रंगों की सहायता से कपड़ों पर चित्रकारी की जाती है। कभी-कभी यह कार्य ब्लॉक प्रिंटिंग एवं हाथ द्वारा चित्रण- दोनों के सम्मिश्रण से भी किया जाता है।

वर्तमान में भारत के दक्षिणी भाग में प्रचलित यह शिल्प-कला एक समय भारत के अन्य भागों में भी प्रचलन में थी। मुगलों के संरक्षण में यह कला अपने उत्कर्ष पर पहुँची और कलमकारी कपड़ों का व्यापार एशियाई एवं यूरोपीय देशों तक फैला।

'कलमकारी' शब्द फ़ारसी के दो शब्दों से मिलकर बना है, 'कलम' और 'कारी'। 'कलम' का अर्थ है- पेन और 'कारी' का अर्थ है- शिल्पकार्य। अतः कलमकारी का अर्थ हुआ कलम से किया जाने वाले शिल्पकार्य। आरंभ में कलमकारी केवल कलम द्वारा ही की जाती थी। परंतु बाद में इसमें ब्लॉक प्रिंटिंग का भी समावेश हो गया। इस प्रकार कलमकारी की दो शैलियाँ बन गईं। पहली, श्री कालाहस्ती शैली जिसमें केवल कलम से चित्रित कलमकारी की जाती थी और मुख्यतः हिन्दू धार्मिक विषयों पर चित्र बनाए जाते थे। दूसरी, मछलीपट्टनम् शैली जिसमें ब्लॉक प्रिंटिंग एवं कलम द्वारा चित्रकारी दोनों के मिश्रण से कपड़े अलंकृत किए जाते थे।

चित्र 15.5: सीता-स्वयंवर

ऐतिहासिक अभिलेख बताते हैं कि लगभग 18वीं सदी में भारत में फारस एवं खाड़ी देशों के साथ होने वाले कपड़ा व्यापार का एक बड़ा भाग कलमकारी कपड़ों का था। भारत के दक्षिणी

भाग के पूर्वी तट का कोरामण्डल, पुलीकट इस व्यापार का प्रमुख क्षेत्र था और संभवत: इसी कारण वर्तमान आंध्रप्रदेश का श्रीकालाहस्ती एवं मछलीपट्टनम कलमकारी के प्रमुख उत्पादन केन्द्रों के रूप में विकसित हुए।

मुगल शासकों के संरक्षण में विकसित मछलीपट्टनम की कलमकारी में शासकों की रुचियों के अनुरूप अभिप्रायों एवं डिजाइनों का व्यापक प्रयोग हुआ। यहाँ नमाज पढ़ने हेतु चटाई, शामियाने, दरवाज़ों के परदों एवं कनातों पर मेहराब, डिज़ाइन के साथ पशु-पक्षी आकृतियाँ एवं फूल-पत्तियों के बूटे बनाए जाते थे। जबकि यूरोपीय बाजार के लिए चादरें एवं रजाइयाँ तैयार की जाती थी। दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों के लिए अंगोछे, गमछे आदि बनाए जाते थे। इसी प्रकार पूर्वी एशिया के देशों के लिए पोशाक एवं जैकेट आदि के लिए कलमकारी कपड़े तैयार किए जाते थे।

शीर्षक	:	**सीता-स्वयंवर**
माध्यम	:	कलमकारी
समय	:	समसामयिक
चित्रकार	:	अज्ञात
संग्रह	:	व्यक्तिगत

सामान्य विवरण

कलमकारी चित्रकार आमतौर पर लोकप्रिय धार्मिक कथानकों के आधार पर चित्र बनाते हैं। इस चित्र में चित्रण-विषय रूप में रामायण के एक मनोहारी आख्यान को चुना गया है। सीता-स्वयंवर (विवाह) के दृश्य में राम को धनुष तोड़ते हुए दिखाया है तथा सीता उनके गले में वरमाला डालने हेतु तैयार हैं। सीता के पास उनके पिता राजा जनक भी खड़े हैं। सीता को चित्र के मध्य भाग में वरमाला लेकर खड़ी हुई दिखाया गया है तथा उनके एक ओर राजा जनक तथा दूसरी ओर श्रीराम को टूटा हुआ धनुष पकड़े दर्शाया गया है। काले रंग की पृष्ठभूमि में हलके नीले रंग से राजा जनक तथा पीले रंग मे सीता एवं गहरे नीले रंग में राम की छवि को बहुत सुंदर रूप से प्रकट किया गया है। कलाकार ने कलम द्वारा काली रेखाओं से प्रत्येक वस्तु एवं चरित्र को स्पष्टता दी है। कलमकारी शैली के अनुसार कलम द्वारा रेखांकन के पश्चात् शरीर, आभूषण, वस्त्र आदि पर लाल, गुलाबी, नीले आदि रंगों को भरा गया है। ज्यामितीय अलंकरणों द्वारा चारों ओर बनाए गए किनारों को सुसज्जित किया गया है। यह दृश्य एक अलंकृत ज्यामितीय सीमा द्वारा तैयार किया गया है। पारंपरिक तौर पर कलम बनाने के लिए बाँस या खजूर की टहनी की लगभग 8 इंच लम्बी तीली लेते हैं जिसे छीलकर गोल बना लिया जाता है। इसका एक सिरा नुकीला बना लिया जाता है जिससे चित्रकारी की जाती है। इसके मध्य भाग में थोड़ा सा ऊन लपेट दिया जाता है। यह भाग रंग सोख लेता है और चित्रकारी करते समय इस पर हल्का दबाव डालने पर यहाँ से रंग कलम के सहारे बहता हुआ चित्रित किए जाने वाले कपड़े पर प्रवाहित होने लगता है।

कलमकारी में प्रमुखत: वनस्पति एवं प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया जाता है। ये रंग हैं- काला, लाल, नीला और पीला। इन प्राथमिक रंगों के संयोजन से हरा, नारंगी और बैंगनी रंग भी बना लिया जाता है। समूचे चित्रांकन की बाह्य रेखा काली बनाई जाती है।

कलमकारी एक जटिल प्रक्रिया है। इसे अधिकांशत: सूती कपड़े पर किया जाता है। इसे करने के विभिन्न चरण निम्न प्रकार हैं-

1. कपड़े को सर्वप्रथम भैंस या बकरी के गोबर के घोल में अच्छी तरह भिगोकर और धूप में सुखाकर ब्लीच किया जाता है।
2. ब्लीच किए हुए कपड़े को हरड़ (हर्रा) के घोल में ब्लीच किया जाता है।
3. अब कपड़े पर कलप, ब्रश या ब्लॉक द्वारा बनाए जाने वाले डिजाइन अथवा आकृतियों का रेखांकन किया जाता है।
4. इसके बाद लाल रंग की रंगाई की जाती है या लाल रंग को ब्रश द्वारा भी भरा जाता है।
5. अब नीले रंग की रंगाई की जाती है। इसे ब्रश द्वारा या रंगाई द्वारा भी किया जा सकता है।
6. अब तैयार कपड़े को सुखा कर बहते पानी में धोया जाता है।
7. अब तैयार कपड़े को दूध के घोल में ब्लीच करके सुखा लिया जाता है।
8. इसके बाद आवश्यकता के अनुसार पीला और हरा रंग ब्रश से लगाया जाता है।
9. अंत में कपड़े को पुन: बहते पानी में धोकर सुखा लिया जाता है।

पाठगत प्रश्न 15.5

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

1. कलमकारी में ..... रंग प्रयुक्त किए जाते हैं।
2. काले रंग का रेखांकन करने से पहले कपड़े को ..... घोल में डालना आवश्यक है।
3. कलमकारी कपड़ों का निर्यात भारत से ....., ... देशों में किया जाता है।

आपने क्या सीखा

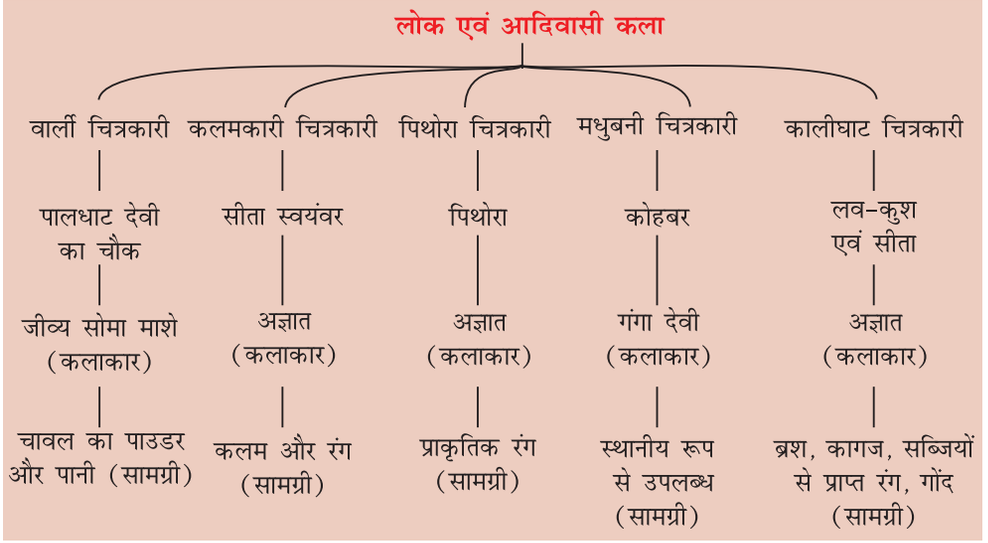

सीखने के प्रतिफल

शिक्षार्थी -

- लोक और जनजातीय कलाकृति को चित्रित करने के लिए स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्रियों का उपयोग करके रंग बनाते हैं।
- अपने घर और अन्य वस्तुओं को सजाने के लिए विभिन्न प्रकार की लोक और जनजातीय कलाओं का उपयोग करते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. विवाहोत्सव के अवसर पर बनाई गई वार्ली पेंटिंग को क्या कहा जाता है? यह किसे समर्पित होता है?
2. धान की फसल आने के समय उत्सव मनाने के लिए वार्ली चित्रण क्या कहलाती है?
3. पारंपरिक रूप से वार्ली चित्र कौन बनाता है? इसके लिए किस सामग्री का उपयोग किया जाता है?
4. वार्ली चित्रकला की तीन विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
5. एक पारंपरिक वार्ली चित्र में रूपांकनों की सूची बनाइए।
6. लोक और जनजातीय कला की क्या परिभाषा है?

7. आदिवासी भित्ति चित्रकला की विभिन्न शैलियों और उनके राज्यों के नाम लिखिए।

8. वार्ली चित्रकला के रूपांकनों के बारे में लिखिए।

9. भारत के किस राज्य में मधुबनी चित्र की उत्पत्ति हुई? इसके धार्मिक और सामाजिक महत्व का वर्णन कीजिए और कोहबर के रूपांकनों के नाम लिखिए।

10. कलमकारी क्या है? भारत में इसकी कौन-सी दो प्रमुख शैलियाँ हैं? इन शैलियों के अंतर स्पष्ट कीजिए।

11. कालीघाट चित्र बनाने वाले चित्रकार कौन थे? इस शैली की विशेषताएँ बताते हुए इसमें चित्रांकित विषयों की एक सूची बनाइए।

12. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

    (अ) लोक एवं आदिवासी चित्रों में प्रयुक्त होने वाली सामग्री

    (ब) कोहबर घर

    (स) पश्ती चित्र

13. मधुबनी चित्रकला को मिथिला-चित्र के नाम क्यों जाना जाता है?

14. पारंपरिक मधुबनी चित्रण बनाने के लिए आवश्यक सामग्री और रंगों की सूची बनाइए।

15. कालीघाट चित्रकला की दो विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

16. कालीघाट चित्रकला की उत्पत्ति कहाँ और किस काल में हुई थी?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

15.1

1. (i) महाराष्ट्र का थाने ज़िला

2. (ii) जीव्य सोमा माशे

15.2

1. मध्यप्रदेश के झाबुआ ज़िले के भील एवं भिलाला आदिवासियों तथा गुजरात के वडोदरा जिले के राठवा आदिवासियों में पिथोरा चित्र बनाने की परंपरा है।

2. ये चित्र, पिथोरा देव को समर्पित होते हैं इसलिए इन्हें पिथोरा चित्र कहा जाता है।

3. रंग-योजना की दृष्टि से भीलों द्वारा बनाए जाने वाले पिथोरा चित्र अधिक पुरातन, सादा एवं सीमित रंगों से बने होते हैं, जबकि राठवों द्वारा यह चित्र अधिक विवरणात्मक, आलंकारिक एवं चटख रंगों से बनाए जाते हैं।
4. परंपरागत पिथोरा चित्र बनाने वाले चित्रकार को लखींद्रा कहा जाता है। यह चित्र अपने आस-पास सहज उपलब्ध प्राकृतिक रंगों से घर की अंदरूनी दीवार पर बनाए जाते हैं।

15.3

1. कोहबर घर वह कमरा है जिसमें विवाह के उपरांत नव दम्पति गौरीपूजन अनुष्ठान संपन्न करते हैं। कोहबर चित्रों में उर्वरता एवं मंगल प्रतीकों तथा अभिप्रायों के साथ इष्ट देवी-देवताओं का भी निरूपण किया जाता है।
2. एक मधुबनी चित्र अत्यधिक विस्तृत है। इसमें हिंदू महाकाव्यों के प्रसंगों को दर्शाया गया है। मुखाकृति में चेहरे, जीवंत प्राकृतिक रंग और सीमा पर ज्यामितीय अलंकरण इसमें कुछ प्रमुख विशेषताएँ हैं।
3. मधुबनी चित्रों में पौराणिक आख्यान, रामायण, कृष्णलीला, उर्वरता एवं मंगल प्रतीकों तथा अभिप्रायों के साथ देवी-देवताओं का निरूपण किया जाता है।

15.4

1. कालीघाट चित्रों के पारंपरिक खरीददार वे हज़ारों तीर्थयात्री थे जो दर्शनार्थ काली मंदिर आते थे।
2. कालीघाट चित्र मिल में बने कागजों पर जल-रंगों द्वारा बनाए गए हैं।
3. आमतौर पर हिंदू देवी-देवताओं के चित्र ही सबसे लोकप्रिय थे। कालीघाट चित्रकारों ने दैनिक जीवन की घटनाओं का चित्रण किया।

15.5

1. प्राकृतिक एवं सब्जियों के
2. हरड़
3. ईरान, इंडोनशिया

शब्दकोश

अनुष्ठान	किसी पूजा में किया जाने वाला कार्यक्रम
पालघाट देवी	वार्ली आदिवासियों की प्रमुख देवी
लिथोग्राफी	छपाई की एक तकनीक
पटुआ	बंगाल के पारंपरिक व्यावसायिक चित्रकार
अभिलेख	प्राचीन ऐतिहासिक दस्तावेज़